बिहार लोक सेवा आयोग

(Bihar Public Service Commission)

निबंध (Essay)

300 अंक, 3 घण्टे

BPSC मुख्य परीक्षा में नया बदलाव

पढ़िए उनसे जिनकी प्रामाणिकता एवं श्रेष्ठता निर्विवाद है...

चुनौतियाँ एवं समाधान

- ☞ उनके लिए जो निबंध की तैयारी प्रारम्भ कर रहे हैं,
- ☞ उनके लिए जो कहीं, कभी पढ़ चुके हैं एवं स्वयं में सुधार चाहते हैं।
- ☞ उनके लिए भी जो भविष्य में **Expert** बनकर किसी कोचिंग संस्थान में पढ़ाना चाहते हैं।

★ KGS ★

बिहार लोक आयोग ने 14 फरवरी 2023 को निबंध प्रश्न पत्र के प्रारूप को जारी किया है, जिसके अनुसार निबंध के पेपर में तीन खण्ड (SECTION) होगें। प्रत्येक SECTION से एक निबंध को लिखना है। इस प्रकार कुल मिलाकर तीन निबंधों को लिखना है।

Format of Essay Question Paper
(निबन्ध के प्रश्न पत्र की रूपरेखा)

SECTION - I (खण्ड- I)	**100 Marks**

Write any one (01) Essay out of given Topics.
(दिये गये निबंधों में से किसी एक को लिखना है।)

SECTION - II (खण्ड-II)	**100 Marks**

Write any one (01) Essay out of given Topics.
(दिये गये निबंधों में से किसी एक को लिखना है।)

SECTION - III (खण्ड-III)	**100 Marks**

Write any one (01) Essay out of given Topics.
(दिये गये निबंधों में से किसी एक को लिखना है।)

Bihar Specific Topics.
The questions of this section will be in Devnagri Script and it will be transliterated in Roman Script.
(बिहार से संबंधित विशेष टॉपिक)
(इस सेक्शन में निबंध के दिये गये प्रश्न देवानागरी लिपि में होगें और उसका अनुवाद रोमन लिपि में होगा।)

निबंध (Essay)

अंतिम रूप से चयन एवं अच्छे रैंक के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका

- बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC) द्वारा 68वीं संयुक्त मुख्य परीक्षा में निबंध के पेपर को सम्मिलित किया गया जिसका पूर्णांक 300 है। निबंध का पेपर तीन भागों SECTION में बँटा रहेगा। प्रत्येक SECTION में चार निबंध होंगें । प्रत्येक SECTION से एक निबंध को लिखना है जो 100 अंकों का होगा। इस प्रकार BPSC मुख्य परीक्षा में अब निबंध के पेपर में कुल मिलाकर तीन निबंध लिखने होंगे।

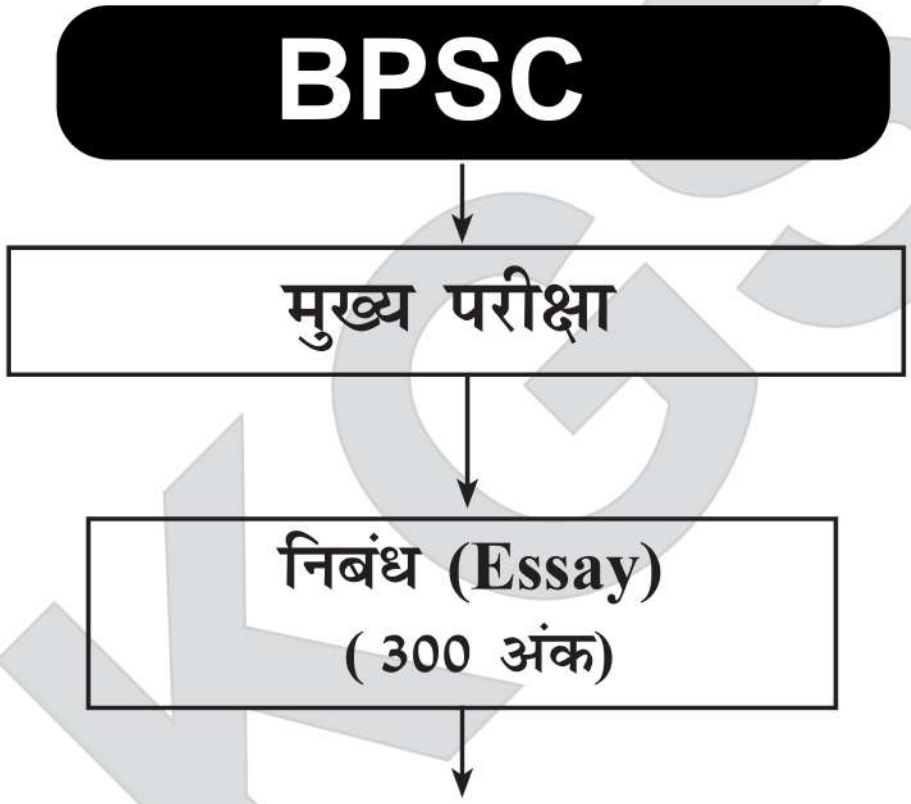

संभावित विषयवस्तु

- नैतिक एवं दार्शनिक निबंध
- परिकल्पनात्मक निबंध
- सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक मुद्दों से संबंधित निबंध
- साहित्य, सभ्यता एवं संस्कृति से संबंधित निबंध
- पर्यावरण, पारिस्थितिकी, आपदा प्रबंधन, ग्रीन एनर्जी एवं नवीन प्रौद्योगिकी से संबंधित निबंध
- नारी / लिंग समानता / महिला सशक्तिकरण से संबंधित निबंध
- राष्ट्रीय मुद्दों, वैश्विक व्यवस्था एवं अंतर्राष्ट्रीय ज्वलंत मुद्दों एवं नीतियों से संबंधित निबंध
- समसामयिक घटनाओं, चुनौतियों एवं समाधान से संबंधित निबंध
- मानवीय मूल्य, मानवता एवं शिक्षा से संबंधित निबंध
- अधिकार, कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व से संबंधित निबंध
- आत्मनिर्भर भारत एवं डिजिटल इण्डिया से संबंधित निबंध
- बिहार की समस्याओं एवं समाधान तथा सम्भावनाओं से संबंधित निबंध
- बिहार के प्रचलित लोकोक्तियों एवं कहावतों से संबंधित निबंध

निबंध

निबंध आधुनिक गद्य साहित्य की एक लोकप्रिय, सशक्त एवं महत्वपूर्ण विधा है। इसके माध्यम से व्यक्ति के संज्ञानात्मक एवं संवेग. ात्मक पक्ष के साथ-साथ उसकी अभिवृत्ति (Attitude) एवं अभिक्षमता का भी पता चलता है।

निबंध लेखन के क्रम में विषयवस्तु से संबंधित विभिन्न पक्षों, आयामों एवं संबंधित विचारों को क्रमबद्ध रूप से लिखना चाहिए।

निबंध लेखन क्यो?

1. लेखन शैली एवं भाषा कौशल की परीक्षा होती है।
2. व्यक्ति के ज्ञान, अनुभव, व्यवस्थित सोच, विचार एवं भावना का पता चलता है।
3. व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूल्यांकन होता है।
4. अभ्यर्थी की बौद्धिकता, तार्किकता एवं दृष्टिकोण का पता चलता है।
5. विश्लेषणात्मक क्षमता एवं रचानात्मक दृष्टिकोण का परीक्षण।

क्या करें?	क्या न करें?
1. भाषा शैली सरल एवं सुबोध हो।	1. क्लिष्ट संस्कृत तत्सम् शब्दों का प्रयोग
2. विषयवस्तु से संबंधित विभिन्न पक्षों को क्रमिकता से तारतम्यता बनाते हुए लिखें।	2. विषयांतर (विषय से भटकाव)
3. वाक्य-विन्यास ठीक हो तथा विराम चिन्हों का समुचित प्रयोग हो।	3. शाब्दिक गलती, भाषाई त्रुटि
4. तार्किक एवं संतुलित दृष्टिकोण रखें।	4. अनावश्यक पुनरावृत्ति।
5. छोटा पैराग्राफ एवं शब्द सीमा का पालन	5. अतिवादी दृष्टिकोण का समर्थन।
6. उद्धरणों, सूक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग	6. मनगढ़ंत बातें जिनका तार्किक आधार न हो।
7. विचार को तथ्य एवं आंकड़ों से सपोर्ट करें।	7. धर्म विशेष, जाति विशेष, दल विशेष का समर्थन एवं विरोध
8. लोकतंत्र, संविधान, मानवता, नवाचार के समर्थन में हो।	8. सरकार की नीति एवं योजनाओं की सीधे-सीधे आलोचना
9. सुन्दर एवं पठनीय लेखन	9. नकारात्मक या निराशावादी दृष्टिकोण का समर्थन
10. निबंध लेखन का अभ्यास	10. विवादास्पद कथनों का उल्लेख।

निबंध लेखन (ESSAY WRITING)

(निबंध लेखन की तकनीक पर विशेष विवेचन या ध्यातव्य बातें)

निबंध लेखन का वह रूप है जिसमें किसी विषय का विचारपूर्वक एवं रोचक पद्धति से सुसम्बद्ध, रचनात्मक एवं तर्कपूर्ण प्रतिपादन किया जाता है।

अनुदेश (Instruction)

"उम्मीदवार की विषय-वस्तु की पकड़, चुने गए विषय के साथ प्रासंगिकता, रचनात्मक तरीके से सोचने की उसकी योग्यता और विचारों को संक्षेप में युक्तिसंगत और प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करने की तरफ परीक्षक विशेष ध्यान देंगे।"

"Examiners will pay special attention to the candidate's grasp of his material its relevance to the subject chosen, and to his ability to think constructively and to present his ideas concisely, logically and effectively."

- लिखे जाने वाले विषय पर अच्छी पकड़ हो।
- लेखन विषय-वस्तु के साथ प्रासंगिक हो अर्थात् विषय-वस्तु से संबंधित विभिन्न पक्षों का विस्तार करें, न कि किसी गैर-प्रासंगिक पक्ष का।
- विचार रचनात्मक हो अर्थात् केवल निषेधात्मक पक्षों को न लिखें, बल्कि उस विषय के भावात्मक एवं सृजनात्मक पक्षों को भी विस्तार दें।
- प्रस्तुतीकरण संक्षिप्त, युक्तिसंगत एवं प्रभावी हो।
- युक्तिसंगत का आशय है कि आप जो भी लिखें, उसके पीछे समुचित आधार हो।

स्पष्टीकरण

- विषय-वस्तु की पकड़
- लिखे जाने वाले विषय की अच्छी समझ हो।
- मुख्य विषय का मूल भाव समझ में आ रहा हो।
- विस्तार से विषय-वस्तु के विभिन्न पक्षों की समझ हो।
- निबन्ध में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट हो।

प्रासंगिकता

- लेखन विषय-वस्तु से संबंधित हो।
- गैर-प्रासंगिक पक्षों का उल्लेख न करें।
- जो लिखा जाए उसका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंध विषय-वस्तु से हो।

  जैसे-यदि निबंध का विषय समस्या-प्रधान है तो फिर निबंध को लिखते समय निम्नलिखित पक्षों को ध्यान में रखना चाहिए:-

  - समस्या का स्वरूप
  - समस्या का प्रभाव- जीवन के विभिन्न क्षेत्रों यथा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन पर, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर।

- समस्या का कारण
- समस्या को दूर करने के लिए किए गए प्रयास/उपाय
- क्या किया जाना चाहिए, क्या करना होगा
- नए व्यावहारिक उपाय (नवाचार)

रचनात्मक तरीके से सोचने की योग्यता

- विषय से संबंधित भावात्मक एवं सृजनात्मक पक्षों को लिखेंगे।
- अतिवादी दृष्टिकोण से बचेंगे।
- नकारात्मक पक्ष के साथ-साथ सकारात्मक पक्ष को भी लिखें। गुण और दोष दोनों की चर्चा करें।
- रवैया या प्रवृत्ति सकारात्मक हो।
- आशावादी दृष्टिकोण रखें चाहे समस्या जितनी भी गंभीर एवं व्यापक हों।

संक्षेप में

- व्यर्थ में विस्तार न दें।
- एक ही बात को बार-बार बदलते हुए न लिखे।

युक्तिसंगत

- आप जो भी लिखे उसके पीछे पर्याप्त आधार हो। विचारों या वक्तव्यों की पुष्टि या सत्यापन हेतु तथ्यों एवं आंकड़ों को प्रयोग करें। जैसे- बिहार एक जनसंख्या बाहुल्य वाला राज्य है। इसकी पुष्टि हेतु भारत के जनसंख्या घनत्व से बिहार के जनसंख्या घनत्व से तुलना की जा सकती है।
- या तो कुछ आधारों पर किसी मत को सिद्ध करें (Inductive Method) या किसी स्वीकृत तथ्य या अवधारणा के आधार पर अन्य पक्षों को निगमित करें। (Deductive method)

प्रभावी तरीका

- मुहावरें, लोकोक्ति, किसी विख्यात कवि, लेखक या व्यक्तित्त्व का विचार लिखना
- प्रभावी बनाने के लिए विद्वानों के मंतव्य, कविताओं, सूक्तियों या उद्धरणों का प्रयोग करना चाहिए।
- क्रमबद्धता एवं तारतम्यता का होना आवश्यक है।
- संस्कृतनिष्ठ भाषा न हो।
- उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं।
- प्रभावी शब्दों एवं सारगर्भित विचारों से निबंध को जोड़े।
- व्यापक फलक प्रदान करें।

निबंध का चयन

- लगभग 5 मिनट का समय दें।
- सारे निबंधों को बारीकी से पढ़ें। निबंधों के अंग्रेजी अनुवाद को भी पढ़ें। जिस क्षेत्र या विषय पर आपकी विशेष पकड़ या अधिकार हो उस विषय से संबंधित निबंध का चयन कर सकते हैं।
- चयन करने के बाद बाद कॉपी में निबंध के शीर्षक को लिखें।

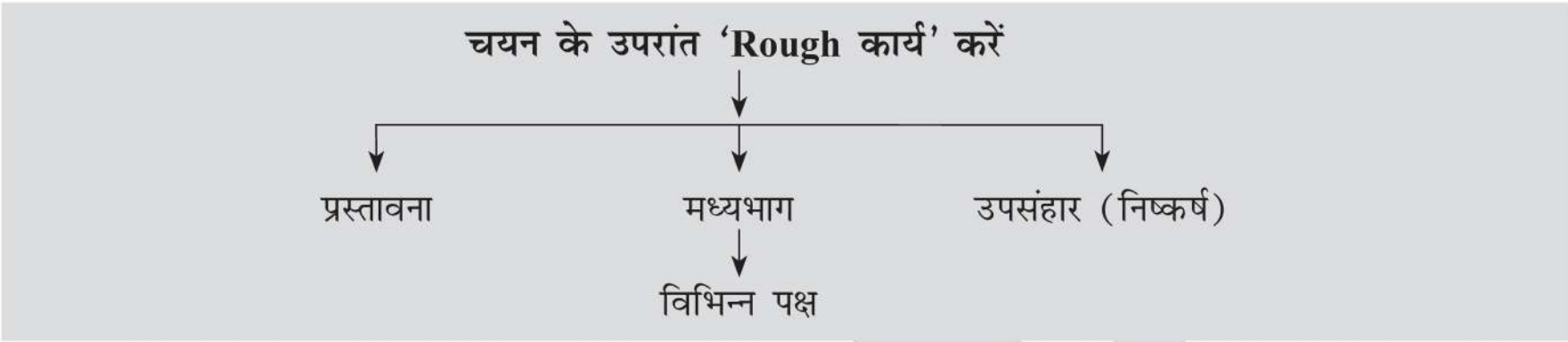

आरंभ/प्रस्तावना: निबंध का आरंभ आप किसी उद्धरण से, किसी घटना के संक्षिप्त विवरण से, निबंध के विषय की प्रासंगिकता से या निबंध के मूल भाव के विपरीत स्थिति से या शीर्षक के महत्त्वपूर्ण शब्द की व्याख्या से शुरू कर सकते हैं। निबंध की शुरुआत ऐसी होनी चाहिए कि पाठक या श्रोता में जिज्ञासा उत्पन्न हो जाये। प्रस्तावना लगभग आठ से दस लाइन की होनी चाहिए।

मध्य भाग: मध्य भाग के विस्तार हेतु आरंभ में ही रफवर्क करें। विभिन्न विचारों, तथ्यों एवं बिन्दुओं का संक्षेप में उल्लेख करें। इन अव्यवस्थित विचाररूप बिंदुओं को लिखते वक्त क्रमिकता पूर्वक विस्तार करें।

निष्कर्ष: मौलिक, संतुलित, व्यावहारिक, रचनात्मक एवं संदेश-उन्मुखी होना चाहिए। तानाशाह की तरह एकतरफा निर्णय या अतिशयोक्तिपूर्ण बातें नहीं लिखनी चाहिए। निष्कर्ष में नैतिकता, जनहितकारिता, एवं प्रजातांत्रिक मूल्यों के अनुरूप भाव होना चाहिए।

अंत में लिखे गए निबंध को गौर से पढ़ें तथा वर्तनी, शब्दों, तथ्यों, तर्कों आदि में कोई त्रुटि हो तो उसमें सुधार करें।

बिहार लोक सेवा आयोग

68वीं एवं 69वीं संयुक्त (मुख्य) प्रतियोगिता परीक्षा हेतु

संभावित निबंध

1. समावेशी विकास: चुनौती एवं समाधान
2. समावेशी विकास : सामाजिक न्याय का आधार
3. भारत की सामासिक संस्कृति एवं उभरती चुनौतियाँ
4. भारत में न्यायिक सुधार: चुनौतियाँ एवं समाधान
5. विज्ञान एवं धर्म – परस्पर विरोध या पूरकता
6. कृत्रिम बुद्धि: भविष्य का द्वार या संकटों का आमंत्रण
7. परमार्थ में ही मानव जीवन की सार्थकता है।
8. रचनात्मक चिंतन सफलता का प्रथम सोपान है।
9. मूल्यपूर्ण जीवन ही सार्थक जीवन है।
10. धैर्य, आशा एवं निरन्तर श्रम सफलता की कुंजी है।
11. कृषि अर्थव्यवस्था : नवाचार एवं नवीन प्रौद्योगिकी की उपयोगिता
12. किसान समृद्धि एवं पोषण सुरक्षा में श्रीअन्न की भूमिका
13. दूरदर्शिता एवं समय के अनुसार परिवर्तन ही सफलता का आधार है।
14. विज्ञान की प्रगति और मानवीय मूल्यों का ह्रास।
15. जीवन में मध्यम मार्ग सफलता की कुंजी है।

16. जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार की भूमिका
17. एक लोकतंत्र में मूल्यों की आवश्यकता।
18. एक नैतिक मूल्य आधारित समाज, वर्तमान की आवश्यकता है।
19. साक्षरता : मानव विकास की आधारशिला।
20. नारी का सौंदर्य आभूषणों से नहीं, सौम्य गुणों से होता है।
21. महिलाओं की भागीदारी से बढ़ता हुआ आर्थिक विकास
22. महिला सशक्तिकरण : दशा एवं दिशा
23. लिंग समानता : स्थापना के उपाय एवं नवाचार
24. भारत में जेण्डर न्यूट्रलिटी (लिंग तटस्थता) की मांग : समानता का नया आयाम
25. नई शिक्षा नीति : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ
26. भारतीय संस्कृतिः विविधता में एकता
27. जो बदलाव आप दूसरों में देखना चाहते हैं- पहले स्वयं में लाइए-गाँधीजी
28. भावी भारत के निर्माण में बुद्धिजीवियों की भूमिका

29. भारत के सम्मुख संकट- नैतिक या आर्थिक।
30. उपभोक्तावादी संस्कृति विनाश का आमंत्रण पत्र है।
31. अधिकार एवं कर्त्तव्य एक ही सिक्के दो पहलू हैं।
32. साधन बीज है और साध्य वृक्ष स्वरूप है।
33. महात्मा गाँधी की वर्तमान कालीन प्रासंगिकता
34. पाप से घृणा करो, पापी से नहीं
35. लोकतंत्रिक विकेन्द्रीकरण एवं पंचायतीराज
36. सुशासन सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन एवं सुधार का आधार है।
37. संवैधानिक मूल्य स्वस्थ लोकतंत्र के सारतत्व हैं।
38. मनुष्य देवत्व एवं पशुत्व के बीच की कड़ी है।
39. सामाजिक विघटन : कारण , स्वरूप एवं निदान
40. मानव पूँजी एवं सामाजिक पूँजी, स्वस्थ जीवन का आधार है।
41. कौशल रहित जनसंख्या ही वास्तविक समस्या है।
42. अगर मैं भारत का प्रधानमंत्री होता।
43. यदि मैं वैज्ञानिक होता!
44. पर्यावरण, विकास एवं विस्थापन
45. जलवायु परिवर्तन एवं कृषि

46. ग्लोबल वार्मिंग, वैश्विक संकट
47. भारत ई-अपशिष्ट प्रबंधन : प्रयास एवं चुनौतियाँ
48. सोशल मीडिया: वरदान या अभिशाप
49. सोशल मीडिया पर नियंत्रण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
50. सोशल मीडिया और निजता का अधिकार
51. आवश्यकता अविष्कार की जननी है।
52. अपने आप में प्रकाश बनें (आत्म दीपो भव:)
53. क्या औपनिवेशिक मानसिकता भारत की सफलता में बाधक हो रही हैं?
54. जल है तो कल है।
55. जल-जीवन मिशन : विकास एवं जीवन का आधार
56. नदी जोड़ो परियोजना : चुनौतियाँ एवं समाधान
57. मूल्यपूर्ण शिक्षा ही भावी जीवन की नींव है।
58. विज्ञान की प्रगति एवं मानवीय मूल्यों का ह्रास
59. समानता, स्वतंत्रता एवं न्याय का विचार परस्पर अंतर्संबंधित हैं।
60. अतीत का अंधानुकरण या पूर्णत: विरोध, दोनों अनुचित हैं।
61. सहकारी संघवाद : मिथक अथवा यथार्थ
62. डिजिटल अर्थव्यवस्था : एक समतावादी या आर्थिक असमता का स्रोत ।
63. डिजिटल लिटेरेसी, डिजिटल डिवाइड और डिजिटल फॉस्टिंग : वर्तमान की चर्चित अवधारणाएँ

64. नकदी रहित अर्थव्यवस्था (कैशलेश इकोनॉमी): सम्भावनाएँ, मुद्दें एवं चुनौतियाँ
65. 'धरती के नीचे की जड़ें शाखाओं को फलदार बनाने के लिए किसी पारितोषिक का दावा नहीं करती।'
66. 'सभी भटकने वाले खो नहीं जाते'
67. आत्मनिर्भर भारत: संभावना, चुनौती एवं समाधान
68. रक्षा क्षेत्र में भारत की उभरती भूमिका : आयातक से निर्यातक का सफर
69. अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की महाशक्ति बनने की संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ
70. आजादी का अमृत महोत्सव : 75 वर्षों की उपलब्धियाँ एवं आगे की राह
71. गांव से शहरों की ओर पलायन : भविष्य की नयी चुनौती
72. साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है न कि दर्पण
73. स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं नैतिक चुनाव लोकतंत्र का आधार है।
74. एक अच्छा जीवन प्रेम से प्रेरित व ज्ञान से संचालित होता है।
75. एक साथ आधुनिकता और रूढ़िवादिता की ओर बढ़ रहा भारतीय समाज
76. गरीबी और जलवायु परिवर्तन से लड़ाई विकासशील देशों के लिए एक चुनौती
77. सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का दावा : आधार, संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

78. सहिष्णुता राष्ट्रीय एकता की कुंजी है।
79. नवप्रवर्तन (नवाचार) आर्थिक संवृद्धि और सामाजिक कल्याण का निर्धारक है।
80. व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका
81. सांप्रदायिकता का बढ़ता दायरा – राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए चुनौती
82. नक्सलवाद : आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ी चुनौती
83. क्या मृत्युदण्ड बढ़ते घृणित अपराधों पर लगाम हेतु अपरिहार्य है?
84. छठीं अनुसूची एवं लद्दाख का मुद्दा।
85. 'जो लोग अतीत से सबक नही लेते, वो इसे दोहराने का अपराध करते हैं।'
86. जहाज बन्दरगाह के भीतर सुरक्षित होता है, परन्तु इसके लिए तो वह होता नहीं है।
87. छप्पर मरम्मत करने का समय तभी होता है, जब धूप खिली हुई हो।

बिहार से संबंधित निबंध

88. बिहार में बाढ़: कारण, स्वरूप एवं निदान
89. बिहार में पर्यटन: संभवाना, चुनौतियाँ एवं समाधान
90. बिहार में महिला सशक्तिकरण: नये उपाय
91. बिहार की गौरवशाली परम्परा: सरंक्षण के उपाय
92. बिहार की प्रमुख सामाजिक समस्याएँ: कारण एवं निदान
93. बिहार में विकास की संभावनाएँ, चुनौतियाँ एवं समाधान
94. बिहार के विकास का आदर्श मॉडल कैसा हो।
95. बिहार में शराबबंदी: चुनौतियाँ एवं समाधान
96. बिहार में शिक्षा अधिकार अधिनियम : क्रियान्वयन की चुनौतियाँ एवं समाधान

97. बिहार का आम बजट : 2023 – लक्ष्य एवं चुनौतियाँ
98. बिहार में स्टार्टअप की संभावनाएँ, चुनौतियाँ एवं समाधान
99. आजादी के 75 वर्ष : बिहार ने क्या खोया, क्या पाया
100. बिहार में खेल संस्कृति का विकास : संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ
101. युवा और बुद्धिजीवी ही नये बिहार का निर्माण कर सकते हैं।
102. अगर मैं बिहार का मुख्यमंत्री होता

103. आग लगी तो कुआँ खोदना।
104. का बरसा जब कृषि सुखानी।
105. जैसी करनी, वैसी भरनी। (जइसन बोअबऽ, ओइसने कटबऽ)
106. भोज गड़ी कोहड़ा। (भोज के समय कोहड़ा रोपना)।
107. नौ दिन चले, अढ़ाई कोस।
108. दउरा में डेग डालल।
109. न खेलब, न खेले देब।
110. दूर के ढोल सुहावने।
111. पूत के पांव पालने में दिख जाते हैं।
112. कर भला तो हो भला।
113. अधजल गगरी छलकत जाए।
114. सोना लुटाय और कोयले पर छापा।
115. बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से होय।

116. जो जागत है वो पावत है, जो सोवत हैं वो खोवत है।
117. मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर करना।
118. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
119. जहाँ चाह, वहाँ राह
120. कर्म करें, फल की चिंता न करें
121. अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।
122. वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे
123. सादा जीवन उच्च विचार।
124. नर हो न निराश करो मन को।
125. परहित सरिस धरम नहिं भाई